INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 5 | JUNE - 2022

मैत्रेयी पुष्पा के 'बेतवा बहती रही' उपन्यास में व्यंजित नारी प्रतिरोध के स्वर

प्रियंका तिवारी[1] & डॉ. आशुतोष कुमार द्विवेदी[2]
[1]शोधार्थी, हिन्दी, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर, महाविद्यालय रीवा (म.प्र.).
[2]प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर, महाविद्यालय रीवा (म.प्र.).

ABSTRACT:

मैत्रेयी पुष्पा के पास अपना भोगा हुआ अनुभूत सत्य होने के कारण नारी चित्रण में सजीवता आई है। बुंदेलखण्ड के आंचल को समग्र रूप में चित्रित किया है। इसका प्रत्यय मैत्रेयी के उपन्यास बढ़ने के बाद आता है। अपने पात्रों को सजीव–साकार रूप में चित्रित करने की अद्भूत क्षमता मैत्रेयी पुष्पा में है। मंदाकिनी, सारंग, उर्वशी, भुवनमोहिनी, रंजीत, बालकिशन, श्रीधर मास्टर आदि पात्र पाठक के मन में अपना स्थान बनाते हैं।

KEY WORDS: मैत्रेयी पुष्पा, उपन्यास, नारी चित्रण, सजीवता एवं पाठक ।

प्रस्तावना:

'मैत्रेयी पुष्पा ने 'बेतवा बहती रही', 'इदन्नमम', 'अगनपाखी', 'चाक', 'अल्मा कबूतरी', 'झूला नट', 'विजन', 'कही ईसुरी फाग', 'त्रिया–हठ', 'कस्तूरी कुण्डल बसै' (औपन्यासिक आत्मकथा) आदि उपन्यासों का सृजन कर, हिन्दी साहित्य जगत में अपना स्थान कायम किया है। इन उपन्यासों पर संगोष्ठियों में बहस होती है। उनके इस कथा संसार को कई साहित्य सम्मानों से भी नवाजा गया है। मैत्रेयी पुष्पा के अधिकतर उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण है। 'विजन' एक मात्र उपन्यास है, जिसमें नगरीय परिवेश आया है। 'विजन' उपन्यास की कथावस्तु चिकित्सा जगत से सम्बन्धित है। अन्य सभी उपन्यासों का केन्द्र ब्रज और बुंदेलखण्ड का ग्रामीण परिवेश है।

मैत्रेयी पुष्पा के अधिकतर उपन्यासों में ग्रामीण जीवन चित्रित हुआ है। यहाँ का ग्रामीण जीवन अन्य भारतीय गाँवों से अलग है। इनके उपन्यासों में अधिकतर ब्रज और बुंदेलखण्ड का ग्रामीण जीवन चित्रित हुआ है। यहाँ गाँवों तक सरकार सुरक्षा की व्यवस्था नहीं पहुँचा पाती हैं। ग्रामीण लोगों में चोर और डाकुओं की दहशत फैली रहती है। उनसे रक्षा करने के लिए गाँव के लोग सतर्क रहते हैं। 'बेतवा बहती रही' उपन्यास के उदय उर्वशी को पहुंचाने सिरसा गये तब देर रात हुई थी सारा गाँव चौकन्ना हुआ। ''धीरे–धीरे अच्छी–खासी जगार पड़ गयी, रात के समय आये राहगीरों से उठी उथल–पुथल। क्या जाने कौन है? लोग चौकन्ने हो उठे। गाँ–पुरवा का सुरक्षा–रहित वातावरण। अपने दम पर दश्यु–दल से जूझता हुआ जिये तो भाग्य का खेल! मरे तो समय की गर्दिश ! पुलिस–पहरे सब व्यर्थ।''[1] गाँव के लोग अपनी सुरक्षा खुद करते हैं। पुलिस उनकी सहायता नहीं कर पाती हैं। यहाँ आज भी गाँवों की यही दशा है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में समाज में व्याप्त अंधविश्वास पर प्रकाश डाला गया है। यह सदी विज्ञान एवं तंत्रज्ञान की सदी मानी जाती है।

[1] मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 100

'बेतवा बहती रही' उपन्यास में उर्वशी के पति सर्वदमन के मृत्यु की खबर आती हैं तब वह सोचती हैं कोई हारी न बीमारी, फिर मृत्यु का यह अप्रत्याशित सन्देश? किसी ने ऐसे ही तो नहीं शायद सिर पर कौआ बैठ गया हो, तब भी तो ऐसी खबर भेज देते हैं।''[2] सर पर कौवा बैठना अशुभ माना जाता है। अशुभ निवारण के लिए मौत का संदेश भेजा जाता है। गाँवों में ऐसा पुराना चलन है जो अंधविश्वास पर टिका है। अंधविश्वास का और एक उदाहरण 'बेतवा बहती रही' उपन्यास में मिलता है। उर्वशी ससुराल जाने के लिए निकली उर्वशी को गाँव के बाहर छोड़ने उसके साथ दादी भी गयी थीं। घर से निकलते ही किसी ने छींक दिया। दादी चौक पड़ी – ''उरवसी बिटिया, ठहर जा। तनक पीछे जाइयो। चल, लौट के पानी पीलै।'' वे जल्दी ही लोटे में पानी भर लाई।''[3] उर्वशी को पानी पिलाया और बाद में ससुराल जाने के लिए निकली। गाँव में आज भी इस रिवाज का पालन किया जाता है।

रीति–रिवाज भारतीय संस्कृति की पहचान है। लोग इसका पालन करते हैं। अगर कोई रीति–रिवाज का पालन नहीं करता है तो उसे समाज में प्रताड़ित किया जाता है। आज भी शिक्षित–अशिक्षित लोग रीति–रिवाजों का पालन करते हुए नजर आते हैं। भय निवारण, सुख की कामना आदि के लिए रीति–रिवाजों का पालन किया जाता है। 'बेतवा बहती रही' उपन्यास की उर्वशी विवाह के बाद अपने पति के घर जाने लगती है। रास्ते वे बेतवा नदी पार करते समय नाइन ने ''चावल–अक्षत, दूब–हल्दी सब उसके हाथ में धर दिया – ''अरपन कर दो बिन्नू, बेतवा कों, ओर विनती कर लो कि ओ बेतवा मइया, मेरी दोस गलती छिमा करियो। भइया–भतीजन की रच्छा करियो। अबके बेटी बनके जनमूँ तो तेरी जई धरती पै, जई रेती में।''[4] बेटी अपने माता–पिता के घर का कुशल–मंगल चाहकर ससुराल जाना चाहती हैं। इस प्रकार के रीति–रिवाज का पालन आज भी भारत में किया जाता है।

विश्लेषण –

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में नारी शोषण के विभिन्न रूप हैं। इसमें सती प्रथा नारी शोषण का एक भयानक रूप है। अपने पात्रों के माध्यम से इस कठोर व्यवस्था में परिवर्तन चाहती है। 'बेतवा बहती रही' उपन्यास का सर्वदमन अपनी पत्नी उर्वशी को समझाता है – ''कभी मैं न रहूँ उर्वशी तो तुम रहना। देख रही हो सामने सती का चौरा– ऐसी सती मत हो जाना– यह कायर थी। तुम कायर नहीं हो उर्वशी– तुम मेरी पत्नी हो सर्वदमन की अर्द्धांगिनी साहसी, निर्भीक।''[5]

स्त्री–पुरुष के यौन सम्बन्धों की मान्यता विवाह देता है। संतान की जिम्मेदारी केवल स्त्री पर न हो इसलिए विवाह का प्रकार रूढ़ हुआ। जाति, धर्म तथा रिवाज के अनुसार विवाह के अलग–अलग प्रकार होते हैं।

विवाह में कुछ कुप्रथाओं का प्रचलन शुरू हुआ। दहेज ऐसी ही कुप्रथा है। कन्यादान की परम्परा ने विवाह में दहेज का रूप धारण किया। कानून बनाकर दहेज प्रथा रोकने का प्रयास किया गया किंन्तु कोई खास परिवर्तन नहीं आया। मैत्रेयी पुष्पा के 'बेतवा बहती रही' उपन्यास में इस कुप्रथा के दुष्परिणाम का जिक्र हुआ है। इस उपन्यास की नायिका उर्वशी के भाई अजीत के सामने दहेज देने की समस्या है। दहेज के कारण अजित अपनी बहन उर्वशी का विवाह चार बच्चों के पिता से तय करने का प्रयत्न करता है। पिता को यह रिश्ता पसंद नहीं आया। उर्वशी के पिता ने अपनी बेटी को योग्य वर के साथ विवाह करने के लिए कर्ज लेते हैं। नाना के साथ उर्वशी के पिता बी.डी.ओ. साहब के पास गये। सरकार कर्ज खेती के विकास के बाँटती हैं किन्तु आम तौर पर कर्ज बेटी के विवाह के लिए उपयोग में लिया जाता है। उर्वशी के नाना बी.डी.ओ. से कहते हैं।'' 'लोन मिलता है साहब आपके यहा, सो मेहरबानी कर दो। आपसे छिपाहें नहीं, लौन हम खाद–बीज के लाने नहीं लै जा रहे। जा मोहन सिंह की बिटिया कौ व्याह है, लागत असाढ़ सादी है साहब।'' नाना ने दो टूक बात उनके सामने रख दी। उर्वशी के दादा हाथ जोड़े बैठे थे।[6] इस उद्धरण से स्पष्ट होता है कि विवाह का धार्मिक रूप कब का खत्म हो चुका है। विवाह अब धन–दौलत पाने का एक जरिया बना है। माता–पिता अपने बेटी के सुख के लिए दहेज देते हैं।

[2] वही, पृष्ठ 62
[3] वही, पृष्ठ 97
[4] मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 42
[5] वही, पृष्ठ 116
[6] मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 36

'बेतवा बहती रही' 'स्मृतिदंश' मैत्रेयी की पहली औपन्यासिक कृति है। परन्तु कथानक और भाषा दोनों ही दृष्टियों से कला के क्षेत्र में कोई उपस्थिति दर्ज नहीं करा सकी। 'बेतवा बहती रही' मैत्रेयी पुष्पा की पहली महत्वपूर्ण उपन्यास है, जिसकी प्रारम्भ में अपेक्षित चर्चा नहीं हुई। फ्लैश बैक के सहारे कहानियों को आगे बढ़ते हुए मैत्रेयी के इस उपन्यास में एकसाथ कई चीजों को उभरा है। सम्पूर्ण झाँसी के भीषण गरीबी, डाकुओं का आतंक, राजनीति में प्रवेश कर रहा अपराध और भ्रष्टाचार और इन सबसे अलग स्त्री काा चौतरफा शोषण। इन सबका साक्षी है निरन्तर खामोश एवं शान्त किन्तु अन्दर ही अन्दर भीषण दाह भरे क्रोध से बहती हुई बेतवा।

'बेतवा बहती रही' एक ऐसी औरत की कहानी है, जिसकी कोई बड़ी आकांक्षा नहीं है, वह जीवन जीना चाहती है, अपनी मर्जी सं। परन्तु क्या समाज ने ऐसा करने दिया। करने भी क्यों देता? क्योंकि यही स्वच्छंदता तो समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनकर सामने आता है। वह तभी तक स्त्री के साथ होता है जब तक वह पुरुषवादी सत्ता द्वारा बनाये गए नियमों एवं कानूनों, नैतिक बन्धनों का पालन करती है। परन्तु –

जैसे ही लड़की
कुछ नया करना चाहती है
अकेली पड़ जाती है
वरना तो लोग साथ देते ही हैं
एक देवी का एक सती का एक रण्डी का।''[7]

''उर्वसी की यह कथा उसी की क्या, किसी भी ग्रामीण कन्या की व्यथा हो सकती है। विपन्नता का अभिशाप शोषण और सनातन संघर्ष। एक विवश यातनामय नारकीय जीवन।''[8]

कहा यह जाता है कि आज हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं। आज का समाज पढ़ा लिखा और आधुनिक है, इस आधुनिकता के दौर में मनुष्य चाँद पर घर बनाने के बारे में सोच रहा है। आज स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा के लिए महिला आयोग जैसे संगठन हैं। लेकिन क्या इन सबके बावजूद स्त्रियों की स्थितियों में कोई परिवर्तन हुआ है। स्वतंत्रता के आधी शताब्दी बीत जाने के बाद भी गाँव की रूढ़िग्रस्तता में कोई कमी आई है ! क्या गाँवों में स्त्रियों के प्रति नजरिया बदला है?'' विपन्न मानसिकता के दुमुँहें समाज में आज भी नारी मात्र वस्तु ! पात्र सम्पति ! विनिमय की चीज है।''[9] यह उपन्यास काल के स्याह अंधेरे में भटकती वासद जिन्दगी की कथा है। यह उन सभी औरतों की कहानी है जो सहने के लिए, झेलने के लिए और जूझने के लिए पैदा होती है और जूझते–जूझते इस संसार को फोड़ जाती है। उर्वशी की तरह।

मनुष्य में कठिन परिस्थितियों में जूझने की क्षमता बढ़ जाती है। स्त्री के सामने तो जन्म के समय से ही कठिन संघर्षों का पहाड़ होता है। तभी तो उर्वसी की माँ कहती है – ''उरवसी बेटी की जात हती सो जी गयी, लड़का होतो तौ न बचतौ।''[10] ऐसे कितने ही मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग मैत्रेयी अपने उपन्यासों में करती हैं। यथा – 'बेटी तो वैसे ही पराये घर की दरिद्र मानी जाती है।'' 'बेटी पराये घर की अमानत ठहरी।' ''का होत मोड़ियन को पढ़ा के कौन सी नौकरी चाकरी कराने है। पराये घर जाने है, सो काम–धंधौ सीखें, गिरिस्ती सम्मारे।''

निष्कर्ष –

यद्यपि मैत्रेयी पुष्पा ने इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन के तमाम विसंगतियों को बहुत बेवाकी से उभारा है परन्तु वह स्त्री कथा के फेर में है जो अग्नि परीक्षा देते–देते अपनी जिन्दगी गुजार देती है। अपनी जिन्दगी पर लानत मनाती, अपने गरीबी पर दुखित होती। पर किसी को दोष नहीं देती। उस नदी की तरह ''शानत ! ठहरी हुई। लहरों के आलोड़न में कोई शोर कोलाहल नहीं। कितना गन्द, झाड़–झंखाड़, फेंका, पटका जाता है उसमें, मन छिलता–खुरचता तो होगा। पीर भी होती होगी, पर विचलित नहीं होती, अपवित्र भी नहीं। किस अंतर में सोख जाती है सारा दर्द?'' यह उपन्यास भावुकता के अतिरेक से ग्रस्त है। इसमें यथार्थ की गहरी पकड़ की अपेक्षा भावुक पाठकों के आँखों में आँसुओं की बाढ़ ला देने की क्षमता अधिक है।

[7] मैत्रेयी पुष्पा – सुनो मालिक सुनो, पृष्ठ 176
[8] मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 6
[9] वही, पृष्ठ 8
[10] मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 14

संदर्भ –

- मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 100
- मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 62
- मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही,पृष्ठ 97
- मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 42
- मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही,
- मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 36
- मैत्रेयी पुष्पा – सुनो मालिक सुनो, पृष्ठ 176
- मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 6
- मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 8
- मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृष्ठ 14